दैनिक जागरण
सत्संग जीवन को सुधारने का मूल आधार है

दुष्प्रचार अभियान

सुप्रीम कोर्ट के दूसरे सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश एके सीकरी ने कॉमनवेल्थ ट्रिब्यूनल के लिए खुद को नामित करने की अपनी सहमति जिस तरह वापस ली उससे यही स्पष्ट हुआ कि उन्होंने अपने खिलाफ छेड़े गए दुष्प्रचार से आहत होकर यह कदम उठाया। यह देखना कष्टदायक है कि हर तरह के विवादों से दूर और नीर-क्षीर फैसलों के लिए चर्चित एक न्यायाधीश शरारत भरे दुष्प्रचार का शिकार बन गए। जस्टिस सीकरी उस उच्च स्तरीय चयन समिति में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के प्रतिनिधि के तौर पर शामिल थे जिसने सीबीआइ के निदेशक आलोक वर्मा को स्थानांतरित करने का फैसला किया था। चूंकि इस समिति में शामिल लोकसभा में कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे आलोक वर्मा के पक्ष में थे इसलिए जस्टिस सीकरी के वोट को ही निर्णायक माना गया। उनके निर्णायक वोट को इससे जोड़ दिया गया कि वह सेवानिवृत्ति के बाद लंदन स्थित कॉमनवेल्थ सेक्रेटेरिएट आर्बिट्रल ट्रिब्यूनल का सदस्य बन जाएंगे। इससे सिलसिले में यह प्रतीति जानबूझकर कराई गई कि सरकार ने उन्हें इस ट्रिब्यूनल का सदस्य बनाने का फैसला इसलिए लिया, क्योंकि वह आलोक वर्मा को स्थानांतरित करने के उसके फैसले के पक्ष में आ गए थे। इस झूठ को प्रचारित करने के लिए यह भी रेखांकित किया गया कि उक्त ट्रिब्यूनल का सदस्य बनना एक मलाईदार पद हासिल करना है। इस तथ्य को छिपाया गया कि इस ट्रिब्यूनल के सदस्य को न तो कोई वेतन मिलता है और न ही उसे लंदन में स्थाई रूप से रहना होता है। उसे बस साल में दो-चार बार वहां जाना होता है। इस तथ्य की भी अनदेखी की गई कि उन्हें उक्त ट्रिब्यूनल का सदस्य बनाने का फैसला बीते दिसंबर में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की सहमति के बाद किया गया था। तब सीबीआइ निदेशक आलोक वर्मा के बारे में कोई फैसला नहीं हुआ था।

जस्टिस सीकरी के खिलाफ दुष्प्रचार छेड़ने वालों ने इस सच को महत्ता देना जरूरी नहीं समझा कि उन्हें उच्च स्तरीय चयन समिति में खुद मुख्य न्यायाधीश ने भेजा था। स्पष्ट है कि ऐसी व्याख्या का कहीं कोई आधार नहीं था कि जस्टिस सीकरी ने कॉमनवेल्थ ट्रिब्यूनल का सदस्य बनने के एवज में आलोक वर्मा को स्थानांतरित करने के सरकार के फैसले का समर्थन किया, फिर भी ऐसा ही किया गया। ऐसा करते समय इसकी भी अनदेखी की गई कि मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ ने आलोक वर्मा को पाक-साफ नहीं पाया था। इस पीठ ने उन्हें सीबीआइ निदेशक पद पर बहाल करने का फैसला अवश्य दिया था, लेकिन उन पर नीतिगत निर्णय न लेने की बंदिश लगाते हुए कहा था कि उन्हें पूरे अधिकार तब मिलेंगे जब उन्हें नियुक्त करने वाली चयन समिति उनके बारे में विचार कर लेगी। इस समिति ने बहुमत से यह फैसला किया कि उनका स्थानांतरण किया जाना चाहिए। निःसंदेह यह फैसला तमाम लोगों को रास नहीं आया, लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि उसके कारण जस्टिस सीकरी को लांछित किया जाता। समझना कठिन है कि जो लोग आलोक वर्मा को पाक-साफ मानने की जिद पकड़े हैं वे यह क्यों नहीं देख रहे कि सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें क्लीनचिट नहीं दी थी?

गुणवत्ता पर सवाल

किसी भी उद्योग की विश्वसनीयता उसके उत्पाद के आधार पर ही होती है, लेकिन यह चिंता का विषय है कि हर महीने हिमाचल प्रदेश में बनी दवाओं के सैंपल फेल हो रहे हैं, जिससे उद्योगों की साख पर सवाल खड़े होते हैं। दवा उत्पादन में हिमाचल की पहचान उत्तर भारत के अग्रणी राज्यों में की जाती है। अधिकतर उद्योग सोलन जिले के बद्दी, सिरमौर, ऊना और कांगड़ा जिलों में स्थापित हैं जो देश-विदेश की दवाओं की जरूरत पूरी करते हैं, लेकिन हिमाचल में बनने वाली कई दवाओं की गुणवत्ता पर सवाल उठे हैं। मामला लोगों की सेहत से जुड़ा है, लिहाजा यह चिंताजनक है। इस माह भी देशभर में 29 दवाओं के सैंपल फेल हुए हैं। इनमें आठ दवाएं हिमाचल प्रदेश के फार्मा उद्योगों में निर्मित हुई हैं। इनमें कहीं धूल के कण मिले तो कई मानकों के मुताबिक कम घुलनशील पाई गई हैं। महिला रोग, फॉलिक एसिड, सिरदर्द सहित कई गंभीर बीमारियों की दवाएं जांच में सही नहीं मिली हैं। कुछ दवाओं में धूल-मिट्टी के कण मिले हैं तो कुछ दवाओं में अन्य कमियां पाई गई हैं। सेंट्रल ड्रग स्टेंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (सीडीएससीओ) ने दिसंबर का ड्रग अलर्ट जारी किया है। दवा में खोट होना सीधे-सीधे लोगों की सेहत से खिलवाड़ है। बार-बार ऐसे मामलों में हिमाचल के दवा उद्योगों के नाम की मौजूदगी प्रदेश की छवि पर भी बुरा प्रभाव डालती है। केंद्रीय दवा मानक नियंत्रण संगठन की ओर से अलर्ट जारी होने के बाद हर बार नोटिस जारी किए जाते हैं, लेकिन सवाल यह है कि दवा जैसे संवेदनशील उत्पाद के निर्माण में कोताही क्यों बरती जा रही है। दवा के सैंपल होने वाले कारकों की तलाश करके इस दिशा में कदम उठाने की पहल की जाए ताकि बार-बार इस तरह के मामले सामने न आएं। दवाओं के बैच वापस लाने का आदेश दिया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इसकी निगरानी कौन कर रहा है। लोग इस तरह की दवा को कैसे पहचान पाएंगे। स्वास्थ्य विभाग के साथ-साथ दवा नियंत्रक की ओर से जब तक इस मामले में सख्ती नहीं बरती जाएगी, तब तक इस तरह की लापरवाही सामने आती रहेगी।

अतीत के अतार्किक मोह से बचें

डॉ. भरत झुनझुनवाला

यदि हम देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाना चाहते हैं तो हमें प्राचीनकाल के विमान की चर्चा के बजाय नवीन शोधों और आधुनिक मिसाइलों पर ध्यान देना चाहिए

अवधेश राजपूत

हाल में इंडियन साइंस कांग्रेस के वार्षिक आयोजन में दावा किया गया कि प्राचीन भारत में टेस्ट ट्यूब से संतान पैदा की जाती थी और रावण के पास हवाई जहाज थे। चूंकि अपने पुराने वैभव को जानने से हमारा आत्मसम्मान और आगे बढ़ने का हौसला बढ़ता है इसलिए उसे जानना अत्यंत आवश्यक है, लेकिन हमारे दो प्रकार के वैभव हैं। कुछ वैभव आधुनिक विज्ञान द्वारा पुष्ट नहीं किए जाते हैं। जैसे हवाई जहाज होने के कोई पुरातत्व अवशेष नहीं हैं, मगर दूसरी कई वस्तुओं के काफी वैज्ञानिक साक्ष्य उपलब्ध हैं। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व यानी ईसा से तीन हजार वर्ष विश्व में तीन प्रमुख सभ्यताएं थीं- मिस्र, इराक और भारत। मिस्र के लोगों का मानना था कि वे पूरब में सागर पार से आए थे। प्राचीन मिस्र के एक ग्रंथ में कहा गया है कि सूर्य का उदय मनु की भूमि में होता है। पूरब में मनु की भूमि भारतीय मनु से मेल खाती है। दोनों बातों को साथ में जोड़ें तो संकेत मिलता है कि पूरब दिशा में स्थापित मनु की भूमि से लोग मिस्र पहुंचे थे यानी मिस्र के लोगों की जड़ें भारत में थीं। इसी क्रम में प्राचीन इराकी साहित्य में कहा गया है कि वे लोग दिलमन नामक स्थान से वहां आए थे। इराकी भाषा वैज्ञानिक सैमुअल नोआ क्रेमर के अनुसार भारत का नाम ही दिलमन था। इससे यही संकेत मिलता है कि इराक के लोग भी भारत से पलायन कर वहां जा बसे थे। इन दोनों सभ्यताओं की जड़ें भारत में होने का संकेत इससे भी मिलता है कि मिस्र और इराक की तुलना में भारत के शहरों का आकार दस गुना बड़ा था। भारत में पकी हुई ईंटों से मकान बनाए जाते थे जबकि मिस्र में कच्ची ईंटों से। इससे पता लगता है कि भारत ज्यादा विकसित देश था यानी कांस्य युग में भारत सर्वश्रेष्ठ ही नहीं, बल्कि शेष दोनों सभ्यताओं का उद्गम स्थल दिखता है।

ईसाई और इस्लाम धर्म की जड़ें भी भारत में दिखती हैं। बाइबल में बताया गया है कि प्रथम मनुष्य आदम ईडन के बगीचे में रहते थे जहां से चारों दिशाओं में नदियां बहती थीं और जो एक पहाड़ पर स्थित था। ऐसी ही स्थिति राजस्थान के पुष्कर में दिखती है। वहां एक छोटी सी पहाड़ी पर ब्रह्मा जी का मंदिर है जिन्हें भारतीय सभ्यता में प्रथम सृष्टिकर्ता माना जाता है। पुष्कर से चार नदियां चार दिशाओं में भी बहती हैं। मुस्लिम परंपरा की दाईफ नामक कुछ किंवदंतियों में भी कहा गया है कि हजरत अदम भारत में उतरे थे। बाइबल में कहा गया कि नूह के समय बाढ़ का पानी 150 दिन तक ठहरा हुआ था। वर्तमान में राजस्थान के ही जालौर क्षेत्र में बाढ़ का पानी गांवों में तीन-तीन महीने तक टिका रहता है। वहां पर मत्स्यावतार की मान्यताएं भी मिलती हैं। मीणा समुदाय के लोग स्वयं को मत्स्यावतार का वंशज मानते हैं। जालौर में उनका बाहुल्य संकेत करता है कि मत्स्यावतार के समय यहां बाढ़ आई होगी। बाइबल और कुरान में उल्लेख है कि मूसा यहूदियों को लेकर मिस्र नामक देश से बाहर गए थे। उन्हें पानी से भरा हुआ एक इलाका भी पार करना पड़ा था। दैवीय कृपा से उस क्षेत्र का पानी फट गया और यहूदी लोग सूखी जमीन पर उस पानी से पार हो गए। कुरान के अनुसार पहाड़ से बालू गिरा, पानी वापस आया और यहूदियों का पीछा करते पीछे आ रहे फिरौन को डुबा दिया। यह परिस्थिति सिंधु नदी से मेल खाती है। सिंधु नदी के किनारे बलूचिस्तान क्षेत्र में मिट्टी के ज्वालामुखी फटते हैं। इनमें लावा के स्थान पर मिट्टी निकलती है। संभव है कि सिंधु नदी के ऊपरी हिस्से में मिट्टी का एक ज्वालामुखी फूटा हो जिसने कुछ समय तक पानी के बहाव को रोक दिया हो और यहूदियों ने पानी के स्थान पर सूखी जमीन को पार कर लिया हो।

अटलांटिक पत्रिका में प्रकाशित एक शोध के अनुसार ईसा मसीह के समय विश्व की आय में भारत का हिस्सा चालीस प्रतिशत, चीन का तीस प्रतिशत, इराक और मिस्र का मिलाकर बीस प्रतिशत और शेष विश्व का मात्र दो प्रतिशत था। भारत उस समय विश्व का सबसे अधिक समृद्ध देश था, लेकिन ईसा के हजार वर्ष बाद हमारा निरंतर आर्थिक पतन होता चला गया। पहले हम मंगोलों के बारूद के सामने नहीं टिके। फिर अंग्रेजों की तोप के सामने घुटने टेककर हम गुलाम हो गए और विश्व की आय में हमारा हिस्सा चालीस प्रतिशत से घटकर मात्र तीन प्रतिशत रह गया।

हमारे पास अपने पुराने गौरव के तमाम ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जो आधुनिक विज्ञान सम्मत हैं। भारत, मिस्र और इराक की प्राचीन सभ्यताओं का उद्गम स्थल था। संभव है कि यह ईसाई और इस्लाम धर्म का भी का उद्गम स्थल हो। प्राचीन काल में यह विश्व का सबसे समृद्ध देश था। अपने पुरातन गौरव से स्वयं को जोड़ने के हमारे सामने दो रास्ते खुले हुए हैं। एक रास्ता यह है कि हम विज्ञान सम्मत अपने वैभव के आधार पर अपने आत्मसम्मान को जागृत करें। दूसरा रास्ता है कि हम टेस्ट ट्यूब बेबी और रावण के हवाई जहाज जैसी बातों पर यकीन करें। इसमें अंतर इतना ही है कि टेस्ट ट्यूब बेबी और हवाई जहाज के हमें कोई पुरातत्व साक्ष्य नहीं मिलते हैं। इसलिए उनके आधार पर आगे बढ़ने से हमारा वैश्विक विद्वानों के बीच उपहास उड़ना स्वाभाविक है। इससे हमारे आत्मसम्मान पर भी चोट पहुंच सकती है। इसलिए हमें विज्ञान के साथ चलना चाहिए। जब हमारे पास अपने विज्ञान सम्मत वैभव के तमाम साक्ष्य उपलब्ध हैं तो संदिग्ध बातों के आधार पर अपने सम्मान को हासिल करने की जरूरत ही क्या है? अपने हाथ में हीरा हो तो खिड़की के कांच की चमक के आधार पर अपने आत्मसम्मान को बढ़ाने की क्या जरूरत है?

टेस्ट ट्यूब बेबी और रावण के हवाई जहाज जैसे वैभव का आधार हमारे शास्त्र बताए जाते हैं। यह सही है कि हमारे शास्त्र ईश्वरीय ज्ञान देते हैं, लेकिन शास्त्र में लिखे गए शब्दों का अर्थ निकलना पड़ता है। जैसे वाल्मीकि रामायण में कहा गया कि रावण के पास पुष्पक विमान था। अब विमान शब्द का अर्थ होता है जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाए। यह रथ, पानी का जहाज अथवा वायुयान कुछ भी हो सकता है। ऐसे में हमें उस अर्थ को स्वीकार करना चाहिए जो विज्ञान सम्मत हो। विज्ञान भी ईश्वरीय ज्ञान है। वाल्मीकि रामायण के विज्ञान के विरुद्ध होने की संभावना नहीं है। इसलिए हमारा ध्यान अपने उस वैभव की ओर होना चाहिए जिसके अनुसार विश्व की आय में भारत का हिस्सा चालीस प्रतिशत था। इसी वैभव के आधार पर हमें अपने आत्मसम्मान को हासिल करना चाहिए और सात प्रतिशत की विकास दर से आगे सोचना चाहिए। पुराने पुष्पक विमान की चर्चा करने के स्थान पर आधुनिक मिसाइलों को बनाने पर ध्यान देना चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री एवं आइआइएम बेंगलूर के पूर्व प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

सांस्कृतिक चेतना का महापर्व

निरंकार सिंह

कुंभ सरीखे पर्वों और मेलों ने भारतीयता के रूप में राष्ट्रीयता को प्राणवान बनाए रखा है

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना से जुड़ा कुंभ पर्व, भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक अवधारणाओं का जीवंत प्रतीक है। इसीलिए इसे भारतीय संस्कृति का महापर्व कहा गया है। 15 जनवरी से 4 मार्च 2019 तक प्रयाग में संगम के तट पर कई परंपराओं, भाषाओं और लोगों का भी अद्भुत संगम होगा। संगम तट पर स्नान और पूजन का तो विशिष्ट महत्व है ही, साथ ही कुंभ का बौद्धिक, पौराणिक, ज्योतिषीय और वैज्ञानिक आधार भी है। एक प्रकार से कहें तो कुंभ स्नान और ज्ञान का भी अनूठा संगम सामने लाता है। इसे विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला माना जाता है। यह गर्व की बात है कि यूनेस्को ने कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस मेले को दिव्य और भव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए कृतसंकल्पित हैं। उनका प्रयास है कि कुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा, सुरक्षा और श्रद्धाभक्ति से परिपूर्ण माहौल मिले। इसके लिए सरकार कई तरह के उपाय कर रही है।

कुंभ पर प्रयागराज की छटा देखते ही बनती है। इस बार यह छटा कुछ और निराली दिखती है। इस बार मेला क्षेत्र में बड़े-बड़े होर्डिंग्स और बैनरों पर कुंभ की गौरव गाथा लिखी गई है। इसे 'कुंभ की कहानी, प्रयाग की जुबानी' थीम पर प्रस्तुत किया गया है, जिससे पौराणिक महत्व के साथ चित्र भी उकेरे गए हैं। इसी थीम पर शहर में विभिन्न चौराहों पर स्क्रीन पर वीडियो भी चलाए जा रहे हैं। होर्डिंग्स पर चारों वेद तथा स्कंद पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण समेत 18 पुराणों और उपनिषदों के प्रमुख सूत्र वाक्य और रामचरितमानस की चौपाई-दोहे लिखे गए हैं।

प्रयाग के बारे में बहुत कुछ लिखा और कहा गया है, जैसे 'अमृत कलश से बूंद गिरी और तीर्थ हुई प्रयाग की धरती।' इसी तरह यह भी कहा गया है, '88 हजार ऋषियों की तपोभूमि है प्रयाग', 'दसों दिशाओं से संत यहां आते हैं और धर्म के महापर्व की शोभा बढ़ाते हैं', सृष्टि की रचना के बाद ब्रह्मा जी ने यहीं पहला यज्ञ किया।' प्रयागराज के बारे में एक मान्यता यह भी है कि उत्कृष्टता के कारण यह प्रयाग है और प्रधानता के कारण राज। वास्तव में कुंभ पर्व देश के समवेत सांस्कृतिक जीवन का व्यावहारिक उदाहरण है। कुंभ सरीखे पर्वों और मेलों ने भारतीयता के रूप में राष्ट्रीयता को प्राणवान बनाए रखा है। मनुष्य की उत्सवप्रियता की भावना ने ही सांस्कृतिक बोध से स्वयं को परिपुष्ट करते हुए पर्व-चेतना रूप में विकसित किया है। इसी अर्थ में कुंभ पर्व एक राष्ट्रीय पर्व है। अमृत स्नान करते हुए, अमृत पान करने का अनुभव, आत्म भाव से परिपुष्ट हो जाता है। हजारों वर्षों

से चली आ रही कुंभ पर्व की इस सांस्कृतिक विरासत को हमारे देश के मनीषी-चिंतकों, पुराणकारों, ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, धर्माधिकारियों और साधु-संतों ने निष्ठाभाव के साथ, लोकांचलों में निवास करने वाले पठित-अपठित साधारण जनों तक पहुंचाया है।

इस पर्व भावना के पीछे जीवंत आस्था और निष्ठा भाव ही कार्यशील रहा है। यह निष्ठा लाखों-लाख मनुष्यों की चेतना को, सीमित 'स्व' से निकालकर खुले मैदान में, शीत-ग्रीष्म की चिंता न करते हुए सागर-नदियों के तटों पर खींचकर ले जाती रही है। नदियों के तट पर बिना किसी निमंत्रण के श्रद्धालु जन-समाज जीवन-अमृत की खोज में अपार जन-समूह के रूप में उमड़ पड़ता है। इस शरीर रूपी घट में आत्मा रूपी अमृत तत्व विद्यमान माना गया है, जिसको सद्-असद् भाव, अपनी-अपनी आसक्ति मूलक लोभ-मोह आदि वृत्तियों से आच्छादित किए रहते हैं, किंतु विचारवान मनुष्य, शरीर रूपी घट में निहित जल (ब्रह्म) तत्व का साक्षात्कार करते हुए नारायण रूपी महासागर में व्याप्त अमृत तत्व का आचमन करता रहता है। कबीर ने भी शरीर रूपी घट में विद्यमान उस अमृत तत्व का महासागर अथवा शून्याकाश के रूप में ही साक्षात्कार किया है। इस प्रकार घट में निहित अमृत तत्व की अनुभूति ही युग-युगों से भारतीय जन-जीवन को आस्थाशील बनाए हुए है। कुंभ मरणशील मानव के मन को उद्वेलित एवं प्रेरित करता है। इसी प्रेरणा से अभिभूत होकर लाखों लोग कुंभ पर्व के अवसर पर पवित्र जल में स्नान एवं आचमन को प्राथमिकता देते हैं। ऐसा करते हुए सनातन भाव वाला जन-मन, अमृत-भाव की तलाश में उमड़ता हुआ संगम तट पर समाहित होता है। कुंभ के आयोजनों ने भौगोलिक-ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक एकता बनाए रखकर राष्ट्रीय जीवन संदर्भों के प्रति सांस्कृतिक अस्मिता को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई है। जब-जब कहीं कोई कुंभ आयोजित होता है तब-तब लाखों लोग बिना किसी आमंत्रण उमड़ पड़ते हैं। विभिन्न आयु-वर्ग एवं जाति वर्ग-वर्ण के लोग, प्रदेशों की सीमाओं को लांघते हुए गरीब-अमीर के दायरों को तोड़ते-छोड़ते हुए अनेक भाषा-बोलियों में शब्द-साधना करते हुए अपने को परम में समर्पित करने के लिए संकल्पशील दिखाई देते हैं। ऐसा न जाने कब से होता चला आ रहा है। ऐसे आस्थावान श्रद्धालुओं के गतिशील चरण ही रागात्मक संबंधों को जोड़ते हैं। यह जन-आस्था अद्भुत है। कुंभ के अवसर पर मौसम की कष्टपूर्ण परिस्थिति में भी लोगों को जीवन ध्येय का परमश्रेय मिलने का अनुभव तो होता ही है, साथ ही जीवन जीने की सार्थकता का भी अनुभव होता है। कुंभ स्नान के बाद लोगों का समूह जब अपने-अपने घरों को लौटता है तब भी उसकी यही कामना रहती है- 'हे गंगा मैया, हमें फिर बुलाना।'

आज सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन के माहौल में कुंभ सरीखे सांस्कृतिक उत्सवों की बड़ी आवश्यकता है। योगी सरकार इस महापर्व से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का प्रयास कर रही है। वैसे पवित्र कुंभ का रंग ऐसा होता है कि वह तरह के लोगों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। जो लोग भारत दर्शन के लिए आना चाहते हैं उन्हें पूरे भारत की विविधता एक जगह सिमटी हुई मिल जाती है और जो लोग आध्यात्मिक लाभ के लिए आना चाहते हैं उनके लिए तो इससे भव्य आयोजन कोई हो ही नहीं सकता। ऐसे अवसरों पर समाज और सरकार अपने जन-जागरण के कर्तव्यों को गहराई तक समझते हुए सोचें कि 'सुरसरि सम सबकर हित' करने वाली भावना का प्रचार-प्रसार कैसे हो? लोक-मंगल की भावना वाले कुंभ की सार्थकता तभी बढ़ सकती है जब देश के लोगों में सेवा धर्म, परोपकार और नैतिकता की भावना बढ़े और लोगों को दुख, दरिद्रता से मुक्ति मिले।

(लेखक हिंदी विश्वकोश के सहायक संपादक रहे हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

संबंधों के समीकरण

मानव संबंधों में कुशलता प्राप्त करने के लिए उसी प्रकार प्रयत्न करना पड़ता है, जिस प्रकार की-बोर्ड को सीखने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं। जिस व्यक्ति को पियानो बजाना आता है तो वह कोई भी धुन बजाकर श्रोताओं को चकित कर सकता है। यदि पियानोवादक इसे बिना सीखे चलाने का प्रयत्न करेगा तो वह नौसिखिया ही कहलाएगा और धुन को भी सुरीला नहीं बजा पाएगा, बिल्कुल यही स्थिति मानव संबंधों के साथ भी होती है। व्यक्ति जीवन में अनेक व्यक्तियों से मिलता है और सभी अलग-अलग तरह के होते हैं। यदि उनसे व्यवहार करने के लिए व्यक्ति अलग-अलग तरीके सीखने का प्रयास करेगा तो इसमें उसका बहुत अधिक समय लग जाएगा। इसके विपरीत यदि वह मानव संबंधों के कुछ बुनियादी सिद्धांतों को सीख जाएगा तो वह हर तरह के मानव संबंधों में कुशल बन जाएगा। प्रत्येक संगीत रचना दूसरे संगीत से भिन्न होती है। इसी तरह कुशल मानव संबंध बनाने के लिए अलग-अलग चालें नहीं, बल्कि मानव संबंधों की बुनियाद में निपुणता हासिल करनी होती है।

यदि आपको मानव संबंधों का की-बोर्ड अच्छी तरह चलाना आता है तो आप बाधाओं में भी अवसरों को उत्पन्न कर सकते हैं, जबकि मानव संबंधों के की-बोर्ड का ज्ञान न होने पर अवसर भी रुकावट बनकर मार्ग में खड़े हो जाते हैं। मानव संबंधों के की-बोर्ड का ज्ञान होने पर आप कठिन से कठिन समस्या और परेशानी को भी सहजता से दूर कर सकते हैं और स्वयं को अनेक पीड़ाओं और परेशानियों से बचा सकते हैं। मानव संबंधों के महत्वपूर्ण की-बोर्ड हैं-व्यक्तियों से बातें करते समय उनमें रुचि लें, बेरुखी न दर्शाएं। ऐसा करने से व्यक्ति गहराई तक हृदय से जुड़ जाता है। इस की-बोर्ड का निरंतर अभ्यास आपको कभी भी हारने नहीं देगा। मानव संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है कि व्यक्ति को उसके प्राकृतिक स्वरूप में स्वीकार करके उससे संबंध बनाएं और फिर हर कार्य में सफलता पाएं। व्यक्ति का समर्थन करें। समर्थन मिलने पर व्यक्ति के अंदर उत्साह जागृत हो जाता है और धीरे-धीरे वह प्रशंसनीय कार्य करने लगता है। इस तरह आपकी उसके प्रति जो शिकायतें होती हैं वे स्वतः ही कुशल मानव संबंधों के जाल में फंसकर दूर हो जाती हैं।

रेनू सैनी

क्यों बंद हुआ 'राष्ट्रीय प्रसारण'

सुधांशु गुप्त

प्रसार भारती ने जो तर्क दिया है, वह वही है जो किसी कंपनी से कर्मचारियों की छंटनी के समय दिया जाता है यानी कॉस्ट कटिंग

प्रसार भारती बोर्ड ने रेडियो के राष्ट्रीय प्रसारण को बंद करने की घोषणा की है। यही नहीं, अहमदाबाद, लखनऊ, शिलांग और तिरुवनंतपुरम की ब्रॉडकास्टिंग अकादमियों को भी तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया गया है। जो लोग राष्ट्रीय प्रसारण से जुड़े रहे हैं, उनके लिए यह किसी सदमे से कम नहीं है। प्रसार भारती ने राष्ट्रीय प्रसारण को बंद करने के पीछे जो तर्क दिया है, वह वही है जो किसी कंपनी से कर्मचारियों की छंटनी के समय दिया जाता है यानी कॉस्ट कटिंग। रेडियो चैनल घाटे में चल रहा था, इसलिए उसे बंद कर दिया गया।

पहले यह जान लेते हैं कि राष्ट्रीय प्रसारण की महत्ता राष्ट्र के लिए क्या है। देश में इसकी शुरुआत 18 मई, 1988 को तत्कालीन प्रधानंत्री राजीव गांधी ने की थी। राष्ट्रीय प्रसारण की पूरी अवधारणा राष्ट्र को रेडियो के जरिये एक सूत्र में पिरोने की थी। भारत में रेडियो के इतिहास का यह पहला ऐसा चैनल था जो पूरे देश में सुना जाता था। उस समय तक रेडियो प्रसारण देश में 11 बजे तक होता था। इसके बाद सुबह तक सन्नाटा। इस चैनल के माध्यम से पहली बार प्रसारण को रात 2:45 मिनट तक किया गया। मकसद था देश में बैठे फौजी, ढाबे चलाने वाले और रात की पाली में काम करने वाले लोग इसे सुन सकें। बाद में इसका प्रसारण पूरी रात कर दिया गया। यह ऐसा रेडियो चैनल बनता गया जिसके जरिये दक्षिण भारत में रहने वाले लोग हिंदी का कार्यकम सुन सकते थे। राष्ट्रीय प्रसारण में कार्यक्रमों का स्वरूप इस तरह तय किया गया ताकि देश के हर कोने में रहने वाले लोग इससे जुड़ सकें। इसमें शिक्षा, साहित्य, स्वास्थ्य, लघु कथा, मनोरंजन, क्विज शो और समाचार से संबंधित कार्यक्रम शुरू हुए।

दरअसल यह पूरा चैनल ही बीबीसी की तर्ज पर काम कर रहा था। यह भी संयोग की ही बात है कि जब इस चैनल में काम कर रहे एक अधिकारी को यह पता चला कि बीबीसी के पास हर माह 5,000 से ज्यादा खत आते हैं तो उन्होंने एक सपना देखा कि काश हमारे चैनल के पास भी कभी इतने ही खत आएं। जल्द ही उनका यह सपना सच हुआ। पूरे देश से ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका तक से इस चैनल के प्रोग्राम सुनकर लोग खत भेजते। न्यूज पत्रिका शुरू करने वाला भी यह पहला रेडियो चैनल बना। इस सप्ताह और दिस वीक (अंग्रेजी में) वैकल्पिक सप्ताह में चलने वाले कार्यक्रम थे। इस कार्यक्रम से जुड़े लोग हमेशा अपडेट रहते थे। आश्चर्यजनक रूप से यही चैनल था जिसने ईरान-इराक युद्ध से दो घंटे पहले यह खबर दी थी कि किसी भी समय युद्ध शुरू हो सकता है। यह इस चैनल की बड़ी सफलता थी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में नए इनोवेशंस के बारे में इस चैनल पर एक कार्यक्रम चलता था जिसे सुनकर पड़ोसी देशों से भी लोग यहां इलाज के लिए आया करते थे।

राष्ट्रीय प्रसारण से जुड़े सभी लोग अपने काम के प्रति प्रतिबद्ध थे। जिन लोगों ने इस चैनल को देश का अहम चैनल बनाया, वे लोग जाहिर है इसके बंद होने से दुखी हैं। वे अब भी चाहते हैं और जानते हैं कि इस चैनल से मुनाफा कमाया जा सकता है।

-इमेज रिफ्लेक्शन सेंटर

मेलबाक्स

इतिहास को नए सिरे से लिखने की दरकार

हृदयनारायण दीक्षित का 'इतिहास पर नए नजरिये की जरूरत' लेख पढ़ा। लेखक ने बड़ी सूक्ष्मता तथा गंभीरता से इतिहास से संबंधित अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। यह सत्य है कि इतिहास बोध के बिना राष्ट्र बोध संभव नहीं है, लेकिन विदेशी शासकों ने हमारे इतिहास का जितना नुकसान किया उससे अधिक देश आजाद होने के बाद निहित स्वार्थों तथा राजनीति के चलते कुछ वामपंथी लेखकों ने किया। इतिहास को हिस्ट्री के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि वेदों से लेकर आज तक भारत का अपना इतिहास बोध है। इस इतिहास में ही हमारी गौरवशाली परंपराएं निहित हैं, किंतु विडंबना यह रही कि भारतीय मानस को स्वतंत्रता के बाद भी उसके गौरवशाली इतिहास से दूर रखा गया। आज भी हमारे पाठ्यक्रमों में छत्रपति शिवाजी, विक्रमादित्य, रत्नसेन, पद्मावती, रानी लक्ष्मीबाई, स्वामी विवेकानंद, शहीद भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस सरीखे जननायकों की चर्चा लगभग है ही नहीं। आज भी अकबर की महानता, अलाउद्दीन खिलजी का साहस तथा औरंगजेब के शासनकाल का महत्व पढ़ाया जाना क्या यह पराजित जाति की मानसिकता का सूचक नहीं है? क्या आज पाठ्यक्रमों में बदलाव की आवश्यकता नहीं है? आज इतिहास को भारतीय चैतन्य के प्रकाश में देखने की आवश्यकता है जिससे वामपंथी इतिहास लेखन की रुग्णताएं दूर हों। आज जब नए भारत के संकल्प के साथ देश आगे बढ़ रहा है तो पुनः उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर सही इतिहास बोध की आवश्यकता है।

डॉ. वेदप्रकाश, दिल्ली

नेताओं की भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसके जरिये हम अपनी बात को दूसरे तक पहुंचाते हैं। भाषा शालीन होगी तो सुनने वाले को अच्छा लगेगा, अगर इसमें कठोरता, व्यंग्य व अपशब्द होंगे तो यही भाषा नफरत फैलाने का काम करेगी। यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह कैसी भाषा का इस्तेमाल कर रहा है। लेकिन आज भारतीय राजनीति में नेता एक दूसरे के खिलाफ कुछ भी बोलने से गुरेज नहीं कर रहे हैं। बहुत से ऐसे शब्द हैं जिन्हें आम आदमी भी किसी के खिलाफ कहना पसंद नहीं करेगा, उसे ये खुलेआम बोल रहे हैं। नेताओं को यह बात समझनी होगी कि वे जो कुछ बोलते करते हैं उसका समाज पर असर पड़ता है।

shivanityagi0027@gmail.com

मोबाइल पर गेम

आजकल छोटे-छोटे बच्चे भी बिना फोन और टैबलेट के बेचैन हो जाते हैं। स्कूलों के पाठ्यक्रम भी बच्चे ऑनलाइन पढ़ते हैं। ऐसे में उनके माता-पिता भी फोन खरीद कर दे देते हैं, लेकिन उन्हें ये बात नहीं पता कि उनके बच्चे पढ़ने के बजाय ऑनलाइन गेम खेल कर अपने समय को ज्यादा व्यर्थ करते हैं। अब ऑनलाइन गेम उनका ध्यान खींच रहा है। इससे उनका करियर बर्बाद हो रहा है।

विविधा, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म

एक बार फिर साथ

सपा और बसपा का गठबंधन केवल कहने के लिए है। दोनों ही दल वैचारिक रूप से एक दूसरे के धुर विरोधी हैं। इनके कार्यकर्ताओं में भी आपस में कोई तालमेल नहीं है। यही कारण रहा कि पूर्व में इन दलों में गठबंधन देर तक नहीं चल सका था। दोनों ही दल मिलकर सरकार तो बना लिए थे, लेकिन अंदरखाने आपस में इतनी कड़वाहट थी कि एक-दूसरे पर हमलावर हो गए। बाद में भाजपा की मदद से बसपा की सरकार बनी थी। एक बार फिर दोनों दल साथ आए हैं। पार्टियां वहीं हैं, नेतृत्व अलग है। समय बताएगा कि गठबंधन कितना लंबा चलता है।

ऋषि भारद्वाज, नो